अंतरतम से परिवर्तन

यह जरूर लगता है कि जिस मकसद को लेकर हम सब चले हैं, उसे पूरा होने में अभी वक्त लगेगा। पहले लगता था कि बहुत से लोग हैं जो मीडिया में मानवीय मूल्य और सकारात्मक विकास के लिए काम करने के लिए आतुर हैं। लगता अब भी ऐसा ही है पर नीरा राडिया के संवाद जैसे प्रसंग उन आतुर लोगों पर से पर्दा उठा देते हैं और स्वप्न- रचना कुछ दूर खिसकती दिखाई देने लगती है। मीडिया के साथ-साथ, सरकार, राजनीतिक लोग और प्रशासक सभी तो सकारात्मक विकास और मानवीय मूल्यों की बात करते हैं। उसके लिए आतुरता भी बताते हैं, पर यह सच नहीं है। हां, यह सच जरूर है कि वे सब उसके विराधी नहीं हैं। यह अजब विरोधाभास है और जब तक यह है, तब तक हमें, आपको या किसी को भी प्रयास करते रहना होगा।

मूल्यानुगत मीडिया तो दरअसल उस पहल का एक हिस्सा भर है जो मूल्य आधारित पत्रकारिता इसलिए चाहती है कि मानवीय मूल्यों और मानवीय सरोकारों से लदा-भरा समाज बन सके। छह से कुछ ज्यादा वर्ष (सितम्बर, 2005) पहले, देश के कुछ पत्रकारों, मानवीय मूल्य और सरकारों के पक्षधर लोगों ने इसके लिए चल रहे प्रयासों के साथ मीडिया को जोड़कर चलने का प्रयास किया। यह कहा गया था कि संवाद और विचार के फैलाव और विमर्श के लिए मीडिया से बेहतर कोई माध्यम नहीं है। यह भी कहा गया था कि मीडिया से लोगों ने विचार और व्यवहार बदले हैं और वे उसके संदेशों को स्वीकार करते हैं। यह भी बताया गया कि मीडिया सपने बुनने और तोड़ने-दोनों में सहायक होता है और इसलिए अपनी आकांक्षाओं का समाज बनाने में उसकी भूमिका एक उत्प्रेरक की तो जरूर है। इसी सब पर निरंतर संवाद और विमर्श के लिए मूल्यानुगत मीडिया प्रारंभ हुआ। इस पहल अभिक्रम ने कुछ अन्य उपाय भी किए है। यह अब भी विस्तार लेते हुए जारी हैं।

यह पहल प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अंगजा संस्था राजयोग शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान के मीडिया प्रभाग के प्रयत्न का परिणाम भी है। मीडिया प्रभाग ने 1985 के आसपास मूल्यनिष्ठ मीडिया के लिए प्रयत्न प्रारंभ किए थे। यह मानना था कि मीडिया और मीडिया कर्मियों का विश्वास और व्यवहार उन दैवी, सनातन या मानवीय मूल्यों के आधार पर हो जो विकार और हिंसा-व्यभिचार मुक्त समाज रचना के लिए जरूरी है। उससे पहले मूल्यनिष्ठ मीडिया जैसी अवधारणा गंभीर विमर्श का हिस्सा संवभत: नहीं रही है। मुझे याद है कि प्रारंभिक संगोष्ठियों में कई पत्रकार इस को ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं मानते थे। वे कहते थे कि सामाजिक सरोकारों के बजाय तकनीकी और वैश्विक पत्रकारिता से जुड़े विषयों पर विमर्श अधिक सामयिक और लाभकारी होगा। पर अब लगता है आध्यात्म को जीवन परिवर्तन का मुख्य कारक मानने वाली इस संस्था की दृष्टि ज्यादा पारदर्शी थी। आज जब मानवीय मूल्य और उसपर आधारित विकास किसी भी विमर्श का अनिवार्य हिस्सा बन चुका है, तब स्वीकार करना पड़ता है कि इस विमर्श को प्रारंभ करके सचमुच प्रेरक का कार्य किया है। मूल्यानुगत मीडिया की यह पहल भी ऐसे ही विमर्श के दौरान संकल्पित और अंकुरित हुई।

समाज और संस्थाओं में मूल्य ह्रास को देखते हुए ही जो लोग पहले नैतिक नियमन का विरोध करते थे, वे भी इसके पक्ष में खड़े हैं। व्यापार-व्यवसाय में तो पहले ही स्वीकार कर लिया गया था। अब कौशल और सेवा से जुड़े क्षेत्रों में भी यह मान लिया गया है। मीडिया के लोग भी अब यह स्वीकार करते हैं कि नैतिक नियमन होना चाहिये। इसे कौन तय करे, कौन बनाये इस पर अभी मतैक्य नहीं है। उम्मीद करना चाहिये कि इस अवरोध को भी पार कर लिया जायेगा। पर इससे सब कुछ ठीक हो जायेगा, यह आशा करना मृगतृष्णा ही लगती है। यह एक अजब विरोधाभास है जो विरोध के न होते हुए भी है। मानवीय मूल्य और उसपर आधारित विकास का कोइ विरोधी नहीं है पर फिर वह व्यवहार में क्यों नहीं है, इसका कोई उत्तर भी तो नहीं है। नीरा राडिया, मीडिया पर नियंत्रण कर रहे लोगों के व्यापार-व्यवसाय और मीडिया का बाजार तथा स्वार्थ से संबंध, का विवेचन करेगें तो यह स्वीकार करना कठिन नहीं होगा कि सिर्फ नैतिक नियमन या आचार संहिता बना लेने से सबकुछ ठीक नहीं हो जायेगा।

मूल्य स्वनियमन का हिसा हैं, ऐसा कहा जाता है। स्वनियमन उस नैतिकता का भाग है जो आपका अंतरतम है- आपका आत्मा है। मूल्य प्रदर्शनीय तो इसलिये हैं कि वे व्यवहार में आते हैं। आपके सोच और क्रिया का हिस्सा बनने के कारण। यह आत्मा भी जब तक निर्मल और निर्विकारी नहीं है तब तक वह जो मूल्य गढ़ती और व्यक्त करती है वह मानवीय कहां होते हैं। भ्रष्टाचार या व्यभिचार के व्यवहार भी तो आत्मा के माध्यम से ही व्यक्त हो रहे हैं। सुरक्षित और संरक्षित जीवन जीने के बाद भी तो बड़े नौकरशाह मूल्यहीन सम्पति एकत्रित करने को कहां मूल्यहीनता मान रहे हैं। मीडिया ही कहां मान रहा है कि अपसंस्कृति के विस्तार और विकास में उसका भी योगदान है। इसीलिए कि इस तरह के व्यवहार को वे समसामयिक मूल्य मान रहे हैं। और मजे कि बात यह भी है कि इन्हें वे अमानवीय नहीं मानते हैं। तब मानवीय मूल्यों के संबंध में की जाने वाली यह बात उलझती सी लगती है। यदि मूल्य आत्म स्वीकृति का हिस्सा हैं तो इस समय प्रशासन, बाजार और व्यक्ति जो व्यवहार कर रहे हैं, वे उनके स्वीकृत मूल्य हैं। आज कि स्थिति इन्ही मूल्यों का परिणाम है। यह उनकी नैतिकता है, ऐसा भी वे कह सकते हैं।

गणतंत्र दिवस के संबोधन में राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने विकास संवाद के लिए मीडिया को संवेदनशील और उत्तरदायी होने लिए कहा है। यह भी मूल्य ही है। यह व्यवहार में प्रत्यक्ष हों तभी दिखाई देंगे और यह व्यवहार में तब होंगे जब इन्हें अपने अंतरतम से स्वीकार किया होगा। मूल्यानुगत मीडिया के आत्मा के निर्मल और अविकारी होने तथा उसे अपने मूल संस्कार को धारित करने के लिए प्रयत्न करेगा। यह उन मूल्यों के लिए प्रयत्न होगा जिससे वह मानवीय मूल्योंको अपने व्यवहार में भी प्रत्यक्ष कर सकें। एक बार संवेदित मानवीयता उसके दृष्टिपथ में होगी तो वह मानव-विरोधी कार्यों के साथ नहीं होगा और उसमें इतना आत्मबल होगा कि वह सब विरोध करते हुए निष्कम्प और निर्भय रह सके।

० ० ०